Ashtamurtiraksha Stotram

अष्टमूर्तिरक्षास्तोत्रम्

Document Information

Text title : aShTamUrtirakShAstotram

File name : aShTamUrtirakShAstotram.itx

Category : deities_misc, aShTaka, raksha

Location : doc_deities_misc

Author : The Samvat Master, Iswarananda Giriji, Mount Abu

Proofread by : Sunder Hattangadi

Source : Shri Chitrapura Stuti Manjari,3rd ed. 2008

Acknowledge-Permission: Shri Chitrapur Math - Publications Committee https://chitrapurmath.net/

Latest update : March 2, 2018

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

अष्टमूर्तिरक्षास्तोत्रम्

हे शर्व भूरूप पर्वतसुतेश
    हे धर्म वृषवाह काञ्चीपुरीश ।
दववास सौगन्ध्य भुजगेन्द्रभूष
    पृथ्वीश मां पाहि प्रथमाष्टमूर्ते ॥ १॥
हे दोषमल जाड्यहर शैलजाप
    हे जम्बुकेशेश भव नीररूप ।
गङ्गार्द्र करुणार्द्र नित्याभिषिक्त
    जललिङ्ग मां पाहि द्वितीयाष्टमूर्ते ॥ २॥
हे रुद्र कालाग्निरूपाघनाशिन्
    हे भस्मदिग्धाङ्ग मदनान्तकारिन् ।
अरुणाद्रिमूर्तेर्बुर्दशैल वासिन्
    अनलेश मां पाहि तृतीयाष्टमूर्ते ॥ ३॥
हे मातरिश्वन् महाव्योमचारिन्
    हे कालहस्तीश शक्तिप्रदायिन् ।
उग्र प्रमथनाथ योगीन्द्रिसेव्य
    पवनेश मां पाहि तुरियाष्टमूर्ते ॥ ४॥
हे निष्कलाकाश-सङ्काश देह
    हे चित्सभानाथ विश्वम्भरेश ।
शम्भो विभो भीमदहर प्रविष्ट
    व्योमेश मां पाहि कृपयाष्टमूर्ते ॥ ५॥
हे भर्ग तरणेखिललोकसूत्र
    हे द्वादशात्मन् श्रुतिमन्त्र गात्र ।
ईशान ज्योतिर्मयादित्यनेत्र
    रविरूप मां पाहि महसाष्टमूर्ते ॥ ६॥
हे सोम सोमार्द्ध षोडशकलात्मन्

हे तारकान्तस्थ शशिखण्डमौलिन् ।
स्वामिन्महादेव मानसविहारिन्
शशिरूप मां पाहि सुधयाष्टमूर्ते ॥ ७॥
हे विश्वयज्ञेश यजमानवेष
हे सर्वभूतात्मभूतप्रकाश ।
प्रथितः पशूनां पतिरेक ईड्य
आत्मेश मां पाहि परमाष्टमूर्ते ॥ ८॥
परमात्मनः खः प्रथमः प्रसूतः
व्योमाच्च वायुर्जनितस्ततोग्निः
अनलाज्जलोभूत् अद्भ्यस्तु धरणिः
सूर्येन्दुकलितान् सततं नमामि ।
दिव्याष्टमूर्तीन् सततं नमामि
संविन्मयान् तान् सततं नमामि ॥ ९॥

इति श्रीईश्वरनन्दगिरिविरचितं अष्टमूर्तिरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Sunder Hattangadi

Ashtamurtiraksha Stotram
pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*